



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 418]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, मई 8, 2003/वैशाख 18, 1925

No. 418]

NEW DELHI, THURSDAY, MAY 8, 2003/VAISAKHA 18, 1925

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 8 मई, 2003

का.आ. 508 (अ).—केन्द्रीय सरकार ने, विधि विरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 (1967 का 37) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, "दीनदार अंजुमन" को विधि विरुद्ध संगम घोषित कर दिया है।

और उक्त घोषणा अधिसूचना सं. का.आ. 479(अ), तारीख 26 अप्रैल, 2003 को उसी दिन भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii) में प्रकाशित की जा चुकी है।

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार विधि विरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 (1967 का 37) की धारा 19 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह निदेश देती है कि वे सभी शक्तियां, जो उक्त अधिनियम की धारा 7 और धारा 8 के अधीन उसके द्वारा प्रयोक्तव्य हैं, उपरोक्त संगठन के संबंध में राज्य सरकारों और संघ राज्यक्षेत्र प्रशासनों द्वारा भी प्रयोग की जाएंगी।

[फ.सं. II-14017/3/2003-एनआई-III]

ए. के. जैन, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 8th May, 2003

S.O. 508 (E).—Whereas, in exercise of the powers conferred by Sub-section (1) of Section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (37 of 1967), the Central Government have declared the "Deendar Anjuman" as an unlawful association.

And whereas, the said declaration has been published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, section 3, Sub-section (ii) of 26th April, 2003 *vide* notification number S.O. 479(E) of the same date.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 19 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (37 of 1967), the Central Government hereby directs that all the powers which are exercisable by it under sections 7 and 8 of the said Act shall be exercised also by the State Governments and the Union territory Administrations in relation to the above organization.

[F.No. II-14017/3/2003-NI-III]

A. K. JAIN, Jt. Secy.

1299 GI/2003